विशेष लेख

भेड चराने से बॉलीवुड तक बालों का सफर मुम्बई तक

रामफूल गुर्जर,
सहा. निदेशक(जन संपर्क)
जयपुर, राज.
(मो.)8875002802

एक साधारण गरीब परिवार में जन्म लेकर सीमित संसाधनों के बावजूद फाकाकशी का जीवन यापन करने वाला दूदाराम गुर्जर, भीलवाड़ा जिले की ग्राम पंचायत बड़ला के छोटे से ग्राम देवपुरा का वाशिंदा है जो अपनी सृजनात्मक क्षमता और अपने सिर के मजबूत बालों के कारण भीलवाडा जिलें के ग्राम देवपुरा की अलग पहचान कायम कराकर अपने गांव का नाम रोशन व गौरवान्वित कर रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है कि वह अनपढ़ है फिर भी बड़े-बड़े कवि सम्मेलनों में आमंत्रित होता है और कवि सम्मेलनों का शुभारम्भ वह अपने सिर के बल पर नारियल फोड़ कर अपने अभिनय का लोहा मनवाता है। अभिनय के क्षेत्र में सिद्ध हस्तकलाकार श्री दूदाराम ऐसा कलाकार है जिसने कभी रंगमंच का सहारा नहीं लिया बल्कि कुदरती देन के कारण ही वह किसी मजे हुए कलाकार से कम नहीं दिखता है।

1991 का वह दिन श्री दूदाराम के जीवन में अविस्मरणीय रहेगा जब सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से श्री रामफूल गुर्जर एवं छायाकार श्री अशोक गुरावा श्री दूदाराम को फिल्मी सुपर हीरो श्री धर्मेन्द्र से मिलाने ले गए। चौमूं के पास एक ढाणी में उस समय ''मैदान-ए-जंग'' हिंदी फिल्म की शूटिंग चल रही थी। समय की नज़ाकत कहें या श्री दूदाराम का सौभाग्य कि कुछ पल के लिए अपरिहार्य कारणों से फिल्म की शूटिंग रूकी और उस ज़माने के सुपर स्टार श्री धमेन्द्र की एक नज़र श्री दूदाराम के मजबूत गुच्छेदार बालों पर पड़ी तो वे एक टक देखते ही रह गये और अपने पास बुलाया। मैने किसी पत्रिका में श्री दूदाराम पर प्रकाशित इंटरव्यू का अवलोकन करवाया और साथ में फोटो खिचवाई। तत्पश्चात् श्री धर्मेन्द्र अपने साथ ही श्री दूदाराम को ले गए। इसके बाद श्री दूदाराम के फिल्मी अभियान को पंख लग गये। उसी दिन से श्री दूदाराम के भाग्य ने ऐसी करवट बदली कि जो दूदाराम बचपन में भेडे चराकर शाम के समय गुलाबपुरा स्पीनिंग मिल के आस-पास ''हर माल दस रु. में'' आवाज लगाकर अपना व परिवार

का पेट पालन मुश्किल से किया करता था। अब मुम्बई में बॉलिवुड में किस्मत आजमा रहा है।

आज आलम यह है कि श्री दूदाराम के पास एक से एक फिल्मों की एडवांस बुकिंग है। उसने सर्वप्रथम राजस्थान की धरती पर जन्में निर्माता–निदेशक मोहन सिंह राठौड़ की फिल्म जो राजस्थानी भाषा में बनी थी, फिल्म ''भोमली'' में खलनायक का पात्र अदा किया। इसके पश्चात् दूदाराम के पास अन्य हिन्दी फिल्मों के प्रस्ताव आने लगे। जिनमें उनकी प्रथम हिन्दी फिल्म ''जंगल ब्यूटी'' थी। इस फिल्म में इन्होंने एक आदिवासी का रोल अदा किया। हिन्दी फिल्म ''कौन करे कुर्बानी'' में रीछ का अभिनय किया, इसके प्रमुख अदाकार धर्मेन्द्र थे। इनकी अदाकारी से परिपूर्ण फिल्में खलनायक, जंगल ब्यूटी, कौन करे कुर्बानी, अनाम, अन्त, शुद्रा, जेलर, कैदी, ओलाद के दुश्मन, बन्द दरवाजा, हम नहीं या तुम नहीं इत्यादि है।

इनकी एक मात्र अंग्रजी फिल्म किड़नेप प्रिंसेज है। हिन्दी फिल्मों के अलावा राजस्थानी फिल्में, जिनमें इन्होंने अहम् भूमिकाएं निभाई वे फिल्में है भोमली, पगां लागूं सासूजी, जय माँ करवा चौथ, छम्मक–छल्लो, नखराली जाटणी, लाछा गुर्जरी (राकेश नाहटा), गुलाबो, खातो रावत।

एक अन्य भोजपुरी भाषा में निर्मित फिल्म ''बालम म्हारा बांका'' है। छोटे पर्दे पर आने वाले धारावाहिकों में : भारत के शहीद, अशोका दी ग्रेट, गीता सार, अमर कथाएं (11 भूमिकाओं में), अनमोल रत्न, जय हनुमान, गुण्डा, आँच–आँच, निशाना, ये मंजिल दूर नहीं, आतंक ही आतंक (शरद चौधरी) इसमें दूदाराम ने राक्षस का पात्र अदा किया है। सोनी टी.वी के लिए बन रहे धारावाहिक जो निर्माता प्रदीप पंडित द्वारा बनाये जा रहे ''रणचण्डी'', (नारी समस्या पर आधारित) व ''हँसते–हँसते लव हो जाए (हास्य एवं ऑल दी बेस्ट गीत कार्यक्रम)'' इसकी शूटिंग जयपुर में हुई। प्रदीप नाहटा द्वारा निर्मित धारावाहिक चंगेज खां, राजा भृर्तहरि में अपनी प्रतिभा को निखारा हैं।

श्री दूदाराम ज्यादा पढ़े–लिखे नहीं होने के बावजूद कवि और गीतकार भी है। इन्होंने लगभग 300 छोटी बडी कविताएं और गीत लिखे हैं। इनके सृजन में हास्य, व्यंग्य, श्रृंगार, वीर रस आदि सभी तरह की रचनाएं शामिल हैं। वे स्वयं भी गुलाबपुरा में कई बार सम्मेलन आयोजित कर चुके है।

श्री दूदाराम के सिर पर एक तरह से बालों का जंगल है वह अपने सिर पर धडाधड नारियल, फर्सी, चीनी के बर्तन तोड़ते है। अपने बालों से बीस किलो का बाट बांधकर उठाते है। इनके पास बालों के लिए तेल लेने आने वालो के नाम इस प्रकार हैंः– लक्ष्मीकान्त बेर्डे (हास्य अभिनेता), टीकू तलनासियां, गुड्डी मारूती (हास्य अभिनेत्री), शरद चौधरी (निर्माता निर्देशक), नीलू (राजस्थानी फिल्मों की श्रीदेवी), दिनेश हिंगू, अभिषेक, विदेशी नायिका व फाईट फिरोज भाई, मंजीत सिंह, अमर जी, चंद्रेश (नृत्य निर्देशक), दिनेश (बाल कलाकार), पूर्व विधायक श्री कालूलाल जी गुर्जर, निर्माता सम्पत जी बडौदा वाले। बालों का तेल दूदाराम स्वयं बनाते है, इनके लड़कों के बाल भी इन्हीं की तरह मजबूत हैं।

श्री दूदाराम से उनके सिर के अजीबो–गरीब बालों की प्रकृति के बारे में मैनें पूछा तो उनका कहना था कि वे बचपन में जब भेडे चराते थे तो भेंड़ो का दूध नियमित रूप से पीते थे तथा भेंड़ ब्याते ही पहला खीस वे खुद भेड़ के थन से चूसते थे और साथ में मेमने को भी चुसाते थे। जब हाथ खीस मलाई से खूब सन जाते तो खोपड़ी व बालों में रगड़ लेते थे और भेंड़ों से सिर भिड़ा–भिड़ा कर खेलते थे और भेंड़ चराने वाले सखाओं को खूब हंसा–हंसा कर लोट–पोट कर देते थे। बस इसी कारण से मेरा सिर मजबूत हो गया तथा बाल इस तरह के हो गये हैं जैसे लोहे के तार हो। जब मैनें पूछा कि आपके ये बाल और किस काम आते हैं तो उन्होंने बताया कि मेरे ये बाल मेरी कमाई हैं। मै अपने बाल बेचता हूँ और अब तो इसी तरह के बाल रखने वालों के लिए मैनें एक खास तरह का आयुर्वेदिक तेल भी तैयार कर लिया हैं। उन्होंने कहा कि बालों की विग बनाने वाले डॉक्टर मेरे बालों को साल में तीन बार काटते है इसके बदले में मुझे 5 हजार रुपये वार्षिक बालों की कीमत देते है। साथ ही बालों के रख रखाव के लिए उन्हें कुछ राशि नियमित रूप से भी दी जाती है।

इस प्रकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री दूदाराम आज न केवल राजस्थान में बल्कि मुंबई की फिल्म इंडस्ट्री में भी दूदा के नाम से अपनी विशिष्ट पहचान बना चुके हैं।

****